शुक्रतारे के समान (स्वामी आनंद)

पाठ का परिचय

स्वामी आनंद ने प्रस्तुत पाठ में बताया है कि कोई भी महान व्यक्ति अपने महान उद्देश्य में तभी सफल होता हैं, जब उसके सहयोगी उसकी सभी चिंताओं और उलझनों को अपने सिर ले लेते हैं। गांधीजी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई जी और प्यारेलाल जी ऐसे ही व्यक्ति थे। लेखक ने इस पाठ में महादेव जी की बेजोड़ प्रतिभा और व्यस्ततम दिनचर्या पर प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने इस रेखाचित्र में महादेव जी भाई के व्यक्तित्व, ऊर्जा, लगन, सरलता, सज्जनता, निष्ठा और गांधीजी के प्रति समर्पण भाव को पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपनी लेखनी से महादेव भाई के व्यक्तित्व को शुक्रतारे के समान जगमगा दिया है।

पाठ का सारांश

महादेव भाई की शुक्रतारे से तुलना–लेखक के अनुसार आकाश में शुक्रतारे का कोई जोड़ नहीं है। शुक्र चंद्र का साथी माना गया है। उसकी आभा-प्रभा का वर्णन अनेक कवियों ने किया है। लेकिन नक्षत्र मंडल के इस तारे को दुनिया या तो संध्या समय या बहुत सवेरे केवल घंटे-दो-घंटे से अधिक नहीं देख पाती। इसी प्रकार महादेव जी भाई आधुनिक भारत की स्वतंत्रता के उषाकाल में अपनी वैसी ही आभा से हमारे आकाश को जगमगाकर देश-दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे के समान अचानक ही अस्त हो गए।

गांधीजी के वारिस–महादेव भाई गांधीजी के मंत्री थे। मित्रों के बीच वे अपना परिचय गांधीजी के 'हम्माल' तथा उनके पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर के रूप में देते हुए गर्व महसूस करते थे। सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए जब गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया, तब उन्होंने महादेव भाई को अपना वारिस घोषित कर दिया। सन् 1929 तक महादेव जी समूचे देश में प्रसिद्ध हो गए थे।

गांधीजी के दैनिक-साप्ताहिक पत्रों का लेखन–अंग्रेज़ी सरकार के ज़ुल्म और अत्याचार संबंधी लेख मुख्यतः लाहौर के अंग्रेज़ी दैनिक 'ट्रिब्यून' और राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक 'बांबे क्रॉनिकल' में गांधीजी द्वारा लिखे जाते थे। 'ट्रिब्यून' के संपादक कालीनाथ राय को 10 साल जेल की सज़ा दे दी गई। बाद में 'क्रॉनिकल' के निर्भीक अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को अंग्रेज़ी सरकार ने देश-निकाला की सज़ा देकर इंग्लैंड भेज दिया। बंबई से उसी समय 'यंग इंडिया' अंग्रेज़ी साप्ताहिक भी निकलता था, जिसमें हार्नीमैन ही मुख्य रूप से लिखते थे। उनके देश-निकाले के पश्चात् अंग्रेज़ी साप्ताहिक में लिखने वालों की कमी हो गई, तब गांधीजी ने बंबई के तीन बड़े नेताओं शंकरलाल बैंकर, उम्मर सोबानी तथा जमनादास द्वारकादास के निवेदन पर 'यंग इडिया' के संपादक का दायित्व सँभाल लिया। सत्याग्रह आंदोलन के कारण गांधीजी का काम इतना बढ़ गया था कि साप्ताहिक पत्र कम पहने लगा, फलतः इसे सप्ताह में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। बाद में 'नवजीवन' नामक समाचार-पत्र भी गांधीजी द्वारा संचालित होने लगा। इन दोनों समाचार-पत्रों में लेख एवं टिप्पणियाँ देखने का कार्य महादेव भाई का ही था। इन पत्रों में महादेव भाई लेखन के अलावा गांधीजी के कार्यकलापों का विवरण भी प्रस्तुत करते थे।

महादेव के जीवन पर गांधीजी का प्रभाव–महादेव भाई, गांधीजी से जुड़ने के पूर्व अंग्रेज़ी सरकार के अनुवाद विभाग में कार्य कर चुके थे तथा उन्होंने वकालत भी की थी। साथ-ही-साथ उन्होंने 'चित्रांगदा' कच-देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका, 'शरद् बाबू की कहानियाँ' आदि का चमत्कारी अनुवाद भी किया था, लेकिन गांधीजी के संपर्क में आने के बाद उनका साहित्यिक क्षेत्र में कार्य अवरुद्ध हो गया। बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी महादेव भाई जिससे भी मिलते, उस पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते थे। वे अपने कार्य में इतने अधिक व्यस्त रहते थे कि चार घंटे का काम भी एक घंटे में निबटा देते थे। इतनी व्यस्तताओं के बीच भी वे सूत कातते थे, जिसे देखने और सुनने वाले हैरान हो जाते थे।

आकर्षक लेखन-शैली–महादेव भाई की लेखन-शैली अद्भुत व प्रभावशाली थी। महादेव के हाथों लिखे गए लेख, टिप्पणियाँ, पत्र, गांधीजी के व्याख्यान, प्रार्थना-प्रवचन, मुलाकातें, वार्तालापों पर लिखी गई टिप्पणियाँ, सबकुछ फुलस्केप के चौथाई आकार वाली मोटी अभ्यास पुस्तकों में, लंबी लिखावट के साथ, जेट की-सी गति से लिखा जाता था। जबकि वे 'शॉर्ट हैंड' नहीं जानते थे।

महादेव भाई का असामयिक निधन–जीवन-लक्ष्य को साधते तथा व्यस्त जीवन के कठिन रास्तों पर चलते-चलते महादेव की अचानक मृत्यु होना सभी के लिए एक असहनीय दर्द था, जिसे गांधीजी ने भी आजीवन महसूस किया। वर्धा की असहाय गरमी में रोज़ सुबह पैदल चलकर वे मगनवाड़ी से सेवाग्राम पहुँचते थे। वहाँ दिनभर काम करके शाम को पैदल वापस जाते। रोज़-रोज़ 11 मील पैदल चलने का यह सिलसिला लंबे समय तक चला, जिसने उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। उनकी अकाल मृत्यु के कारणों में इसे एक प्रमुख कारण माना जाता है। महादेव भाई की मृत्यु का घाव गांधीजी के दिल में सदैव बना रहा।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) आकाश के तारों में शुक्र का कोई जोड़ नहीं। शुक्र चंद्र का साथी माना गया है। उसकी आभा-प्रभा का वर्णन करने में संसार के कवि थके नहीं। फिर भी नक्षत्र मंडल कलगी-रूप इस तेजस्वी तारे की दुनिया या तो ऐन शाम के समय, बड़े सवेरे घंटे-दो घंटे से अधिक देख नहीं पाती। इसी तरह भाई महादेव जी आधुनिक भारत की स्वतंत्रता के उषाकाल में अपनी वैसी ही आभा से हमारे आकाश को जगमगाकर, देश और दुनिया को मुग्ध करके, शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए। सेवाधर्म का पालन करने के लिए इस धरती पर जनमे स्वर्गीय महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। मित्रों के बीच विनोद में अपने को गांधीजी का 'हम्माल' कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरव का अनुभव किया करते थे।

1. **आकाश के तारों में किसका कोई जोड़ नहीं है–**
   (क) चंद्रमा का (ख) बुध का
   (ग) बृहस्पति का (घ) शुक्र का।
2. **शुक्र किसका साथी माना जाता है–**
   (क) शनि का (ख) मंगल का
   (ग) चंद्र का (घ) बुध का।
3. **भाई महादेव किसके समान अस्त हो गए–**
   (क) शुक्रतारे के समान (ख) सूर्य के समान
   (ग) चंद्रमा के समान (घ) इनमें से कोई नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. **महादेव देसाई गांधीजी के क्या थे–**
(क) भाई (ख) मित्र
(ग) मंत्री (घ) सेवक।
5. **महादेव देसाई किस रूप में अपना परिचय देने में गौरव का अनुभव करते थे–**
(क) गांधीजी के पीर के रूप में
(ख) गांधीजी के बावर्ची के रूप में
(ग) गांधीजी के भिश्ती और खर के रूप में
(घ) उपर्युक्त सभी रूपों में।

उत्तर– 1. (घ) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (घ)।

(2) गांधीजी के लिए वे पुत्र से भी अधिक थे। जब सन् 1917 में वे गांधीजी के पास पहुँचे थे, तभी गांधीजी ने उनको तत्काल पहचान लिया और उनको अपना उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया। सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ़्तार किया गया था। गांधीजी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था। सन् 1929 में महादेव भाई आसेतुहिमाचल, देश के चारों कोनों में, समूचे देश के दुलारे बन चुके थे।
इसी बीच पंजाब में फ़ौजी शासन के कारण जो कहर बरसाया गया था, उसका ब्योरा रोज़-रोज़ आने लगा। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ़्तार करके फ़ौजी कानून के तहत जन्म-कैद की सज़ाएँ देकर कालापानी भेज दिया गया। लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सजा मिली।

1. **महादेव देसाई गांधीजी के लिए क्या थे–**
(क) एक अच्छे मित्र (ख) रक्षक
(ग) पुत्र से अधिक (घ) भाई के समान।
2. **महादेव देसाई गांधीजी के पास कब पहुँचें–**
(क) सन् 1912 में (ख) सन् 1917 में
(ग) सन् 1915 में (घ) सन् 1920 में।
3. **पंजाब जाते समय गांधीजी को कहाँ गिरफ़्तार किया गया था–**
(क) दिल्ली स्टेशन पर (ख) पानीपत स्टेशन पर
(ग) पलवल स्टेशन पर (घ) रोहतक स्टेशन पर।
4. **पंजाब के अधिकतर नेताओं को कहाँ भेज दिया गया–**
(क) तिहाड़ जेल में (ख) विलायत
(ग) कालापानी (घ) यरवदा जेल में।
5. **कालीनाथ राय को कितने साल की सज़ा मिली–**
(क) पाँच साल की (ख) सात साल की
(ग) आठ साल की (घ) दस साल की।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)।

(3) कुछ ही दिनों में 'क्रानिकल' के निडर अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को सरकार ने देश-निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड भेज दिया। उन दिनों बंबई के तीन नए नेता थे। शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास। इनमें अंतिम श्रीमती बेसेंट के अनुयायी थे। ये नेता 'यंग इंडिया' नाम का एक अंग्रेज़ी साप्ताहिक भी निकालते थे। लेकिन उसमें 'क्रानिकल' वाले हार्नीमैन ही मुख्य रूप से लिखते थे। उनको देश निकाला मिलने के बाद इन लोगों को हर हफ़्ते साप्ताहिक के लिए लिखनेवालों की कमी रहने लगी। ये तीनों नेता गांधीजी के परम प्रशंसक थे और उनके सत्याग्रह-आंदोलन में बंबई के बेजोड़ नेता भी थे। इन्होंने गांधीजी से विनती की कि वे 'यंग इंडिया' के संपादक बन जाएँ। गांधीजी को तो इसकी सख्त ज़रूरत थी ही। उन्होंने विनती तुरंत स्वीकार कर ली।

1. **हार्नीमैन किस समाचार-पत्र के संपादक थे–**
(क) क्रानिकल (ख) ट्रिब्यून
2. **हार्नीमैन को सरकार ने क्या सज़ा दी–**
(क) कालापानी की (ख) आजीवन कारावास की
(ग) देश-निकाले की (घ) अंग-भंग की।
3. **बंबई के नए नेता थे–**
(क) शंकर लाल बैंकर (ख) उम्मर सोबानी
(ग) जमनादास द्वारकादास (घ) ये सभी।
4. **बंबई के नए नेता कौन-सा साप्ताहिक पत्र निकालते थे–**
(क) नवजीवन (ख) यंग इंडिया
(ग) सुधारक (घ) मराठा।
5. **बंबई के नए नेताओं ने गांधीजी से क्या विनती की–**
(क) आंदोलन बंद करने की
(ख) साप्ताहिक के लिए लेख लिखने की
(ग) यंग इंडिया का संपादक बनने की
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)।

(4) गांधीजी के पास आने के पहले अपनी विद्यार्थी अवस्था में महादेव ने सरकार के अनुवाद-विभाग में नौकरी की थी। नरहरि भाई उनके जिगरी दोस्त थे। दोनों एक साथ वकालत पढ़े थे। दोनों ने अहमदाबाद में वकालत भी साथ-साथ ही शुरू की थी। इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता है। साहित्य और संस्कार के साथ इसका कोई संबंध नहीं रहता। लेकिन इन दोनों ने तो उसी समय से टैगोर, शरदचंद्र आदि के साहित्य को उलटना-पुलटना शुरू कर दिया था। 'चित्रागंदा' कच-देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका, 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि अनुवाद उस समय की उनकी साहित्यिक गतिविधियों की देन हैं।

1. **महादेव देसाई ने विद्यार्थी अवस्था में कहाँ नौकरी की थी–**
(क) होटल में (ख) समाचार-पत्र के दफ़्तर में
(ग) सरकार के अनुवाद-विभाग में (घ) न्यायालय में।
2. **महादेव देसाई के जिगरी दोस्त थे–**
(क) नरहरि भाई (ख) चिम्मन भाई
(ग) वल्लभ भाई (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. **वकालत के पेशे में आमतौर पर क्या करना होता है–**
(क) सत्य बोलना होता है
(ख) स्याह को सफ़ेद करना होता है
(ग) सफ़ेद को स्याह करना होता है
(घ) स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता है।
4. **दोनों मित्रों ने कहाँ साथ-साथ वकालत शुरू की थी –**
(क) बंबई में (ख) दिल्ली में
(ग) अहमदाबाद में (घ) इलाहाबाद में।
5. **'विदाई का अभिशाप' किसके द्वारा रचित रचना है–**
(क) शरदचंद्र (ख) टैगोर
(ग) प्रेमचंद (घ) भारतेंदु हरिश्चंद्र।

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ख)।

(5) सन् 1934-35 में गांधीजी वर्धा के महिला आश्रम में और मगनवाड़ी में रहने के बाद अचानक मगनवाड़ी से चलकर से गाँव की सरहद पर एक पेड़ के नीचे जा बैठे। उसके बाद वहाँ एक-दो झोंपड़े बने और फिर धीरे-धीरे मकान बनकर तैयार हुए, तब तक महादेव भाई दुर्गा बहन और चि० नारायण के साथ मगनवाड़ी में रहे। वहीं से वे वर्धा की असह्य गरमी में रोज सुबह पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचते थे। वहाँ दिनभर काम करके शाम को वापस पैदल आते थे। जाते-आते पूरे 11 मील चलते थे। रोज़-रोज़ का यह सिलसिला लंबे समय तक चला। कुल मिलाकर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, उनकी अकाल मृत्यु के कारणों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. गांधीजी सेगाँव कब गए–

(क) सन् 1934-35 में (ख) सन् 1932-33 में

(ग) सन् 1930-31 में (घ) सन् 1937-38 में।

2. सेगाँव में वे कहाँ रहे–

(क) एक किसान के घर

(ख) गाँव की सरहद पर एक पेड़ के नीचे

(ग) आश्रम में

(घ) एक झोपड़े में।

3. मगनवाड़ी में महादेव भाई किसके साथ रहे–

(क) नरहरि भाई के

(ख) चि० नारायण के

(ग) दुर्गा बहन के

(घ) चि० नारायण और दुर्गा बहन के।

4. महादेव भाई रोज़ सुबह पैदल चलकर कहाँ जाते थे–

(क) वर्धा के महिला आश्रम में (ख) मगनवाड़ी में

(ग) सेवाग्राम में (घ) नंदीग्राम में।

5. महादेव देसाई की अकाल मृत्यु का एक कारण है–

(क) प्रतिदिन 11 मील चलना (ख) अच्छा भोजन न करना

(ग) अस्थमा का रोग (घ) अधिक आराम करना।

उत्तर– 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'शुक्रतारे के समान' पाठ के लेखक हैं–

(क) स्वामी आनंद (ख) धीरंजन मालवे

(ग) काका कालेलकर (घ) गणेश शंकर विद्यार्थी।

2. स्वामी आनंद का जन्म कब हुआ–

(क) सन् 1880 में (ख) सन् 1882 में

(ग) सन् 1885 में (घ) सन् 1887 में।

3. लेखक ने शुक्रतारे के समान किसे बताया है–

(क) गांधीजी को (ख) वल्लभ भाई को

(ग) विट्ठल भाई को (घ) महादेव देसाई को।

4. गांधीजी ने महादेव भाई को अपना वारिस कब घोषित किया–

(क) सन् 1910 में (ख) सन् 1919 में

(ग) सन् 1915 में (घ) सन् 1920 में।

5. सन् 1929 में महादेव भाई क्या बन चुके थे–

(क) राष्ट्रीय नेता (ख) कांग्रेस के अध्यक्ष

(ग) समूचे देश के दुलारे (घ) गांधीजी के वारिस।

6. 'ट्रिब्यून' के संपादक कौन थे–

(क) हार्नीमैन (ख) शंकरलाल बैंकर

(ग) कालीनाथ राय (घ) उम्मर सोबानी।

7. गांधीजी ने 'यंग इंडिया' को सप्ताह में कितनी बार निकालने का निश्चय किया–

(क) दो बार (ख) तीन बार

(ग) चार बार (घ) पाँच बार।

8. अपनी सारी व्यस्तताओं के बीच भी महादेव भाई क्या करने से नही चूकते थे–

(क) लेख लिखने से (ख) पुस्तकें पढ़ने से

(ग) संगीत सुनने से (घ) सूत कातने से।

9. बिहार और उत्तर प्रदेश के हज़ारों मील लंबे मैदान में सौ कोस चलने पर भी क्या नहीं मिलेगा–

(क) हरियाली (ख) पानी

(ग) पत्थर (घ) झाड़ियाँ।

10. महादेव की ख़ास बात क्या थी–

(क) काम को समय पर पूरा करना

(ख) बोलने से पहले काम करना

(ग) चार घंटे के काम को एक घंटे में निपटना

(घ) चार घंटे के काम को दो घंटे में निपटना।

11. लेखक ने महादेव भाई की प्रतिभा को किस जैसा बताया है–

(क) उच्च कोटि का (ख) सूर्य के समान

(ग) चंद्र-शुक्र के समान (घ) बृहस्पति के समान।

12. महादेव भाई देसाई कौन थे–

(क) गांधीजी के सहपाठी (ख) गांधीजी के निजी सचिव

(ग) एक समाज सुधारक (घ) एक राजनेता।

13. महादेव ने गांधीजी की आत्मकथा का कौन-सी भाषा में अनुवाद किया–

(क) हिंदी में (ख) गुजराती में

(ग) मलयालम में (घ) अंग्रेज़ी में।

14. महादेव का किस चीज़ में कोई मुकाबला नहीं कर सकता था–

(क) बोलने में (ख) काम करने में

(ग) लिखावट में (घ) चलने में।

15. गांधीजी की आत्मकथा का क्या नाम है–

(क) सत्य का प्रकाश (ख) सत्य के प्रयोग

(ग) सत्य-वचन (घ) इनमें से कोई नहीं।

16. गांधीजी को किसकी मौत का सदमा लगा था–

(क) महादेव की (ख) लेखक की

(ग) प्यारेलाल की (घ) संपादक मित्र की।

17. महादेव भाई हँसी-मजाक में अपने को क्या कहते थे–

(क) गांधीजी का हम्माल (ख) गांधीजी का घोड़ा

(ग) गांधीजी का गधा (घ) इनमें से कोई नहीं।

18. लेखक ने 'छोटा बादशाह' किसे कहा है–

(क) वायसराय को (ख) गवर्नर को

(ग) लॉर्ड कर्जन को (घ) लॉर्ड माउंटबैटन को।

19. नरहरि भाई और महादेव ने साथ-साथ किसकी पढ़ाई की थी–

(क) पत्रकारिता की (ख) वकालत की

(ग) संगीत की (घ) हिंदी-अनुवाद की।

20. स्वामी आनंद का मूल नाम क्या था–

(क) चमनलाल (ख) रतनलाल

(ग) हिम्मतलाल (घ) मोहनलाल।

उत्तर– 1. (क) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग) 6. (ग) 7. (क) 8. (घ) 9. (ग) 10. (ग) 11. (ग) 12. (ख) 13. (घ) 14. (ग) 15. (ख) 16. (क) 17. (क) 18. (क) 19. (ख) 20. (ग)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'शुक्रतारे के समान' पाठ में शुक्रतारे से किसकी तुलना की गई है और क्यों?

उत्तर : 'शुक्रतारे के समान' पाठ में शुक्रतारे से महादेव भाई की तुलना की गई है। जिस प्रकार शुक्रतारा नक्षत्र मंडल का सबसे तेजस्वी तारा है, लेकिन वह सुबह-शाम घंटे-दो-घंटे ही अपनी आभा-प्रभा दिखाकर अस्त हो जाता है, उसी प्रकार महादेव भाई स्वतंत्रता के उषाकाल में अपनी वैसी ही आभा से हमारे आकाश को जगमगा कर, देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह अल्पकाल में ही अस्त हो गए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 2 : महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे?

उत्तर : महादेव भाई अपना परिचय गांधीजी के 'हम्माल' तथा अनके पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर के रूप में देते थे।

प्रश्न 3 : महादेव और उनके मित्र ने वकालत का पेशा क्यों छोड़ दिया?

उत्तर : महादेव और उनके दोस्त दोनों अहमदाबाद में वकालत करते थे। इस पेशे का साहित्य और संस्कार से कोई संबंध नहीं था। इसमें स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह किया जाता है। इसीलिए उन्होंने यह पेशा छोड़ दिया।

प्रश्न 4 : 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?

उत्तर : 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में 'क्रानिकल' के संपादक हार्नीमैन मुख्य रूप से लिखते थे, लेकिन अंग्रेज़ों ने उन्हें देश-निकाला दे दिया था, इसलिए 'यंग इंडिया' में लेखों की कमी रहने लगी थी।

प्रश्न 5 : महादेव भाई का गांधीजी से कैसा तादात्म्य था?

उत्तर : महादेव का समूचा जीवन और सारे कार्य गांधीजी के साथ एकरूप होकर इस प्रकार गुँथ गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती थी।

प्रश्न 6 : महादेव भाई को ईश्वर की क्या देन थी?

उत्तर : महादेव भाई की प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार-संपन्न भाषा और आकर्षक मनोहारी लेखन-शैली उनको ईश्वर की अनुपम देन थी।

प्रश्न 7 : महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था?

उत्तर : महादेव भाई के झोलों में ताज़े-से-ताज़े समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और बिलकुल नई जानकारी वाली पुस्तकें भरी रहती थीं।

प्रश्न 8 : महादेव भाई से गांधीजी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है?

उत्तर : महादेव भाई की मृत्यु के सालों बाद भी जब गांधीजी कभी प्यारेलाल को पुकारते तो उनके मुख से अनायास महादेव नाम ही निकलता। इससे महादेव जी से गांधीजी की निकटता का पता चलता है।

प्रश्न 9 : गांधीजी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?

उत्तर : जब गांधीजी को वर्ष 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद पंजाब जाने से रोकने के लिए पलवल स्टेशन पर अंग्रेज़ सरकार द्वारा गिरफ़्तार कर लिया गया, उसी समय गांधीजी ने महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

प्रश्न 10 : 'यंग इंडिया' साप्ताहिक पहले कौन निकालते थे?

उत्तर : 'यंग इंडिया' साप्ताहिक पहले बंबई के तीन नए नेता निकलते थे। इनका नाम था–शंकरलाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारका दास। बाद में गांधीजी इसके संपादक बन गए।

प्रश्न 11 : 'ट्रिब्यून' के संपादक को क्या सज़ा मिली?

उत्तर : पंजाब में फ़ौजी शासन लगते ही मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक समाचार-पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को दस साल की जेल की सज़ा मिली।

प्रश्न 12 : महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?

उत्तर : महादेव भाई ने 'चित्रांगदा' कच-देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका; 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद कर अपना साहित्यिक योगदान किया। उन्होंने महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का भी अंग्रेज़ी में अनुवाद किया।

प्रश्न 13 : पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया?

उत्तर : पंजाब में फ़ौजी शासन ने वहाँ के अधिकांश प्रमुख नेताओं को फ़ौजी कानून के अंतर्गत उम्र-कैद की सज़ाएँ देकर कालापानी के लिए भेज दिया। यहाँ तक कि राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को भी 10 साल की जेल की सज़ा दी गई।

प्रश्न 14 : महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गांधीजी क्या कहते थे?

उत्तर : महादेव भाई के लिखे नोट को गांधीजी काफी प्रामाणिक मानते थे, इसलिए वे अन्य लोगों के लिखे हुए नोट को महादेव भाई के नोट से मिलाने को कहते, जिससे उसमें तथात्मक और वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ 'न' के बराबर रहें।

प्रश्न 15 : गांधीजी से मिलने आने वालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?

उत्तर : महादेव भाई गांधीजी से मिलने आने वालों की समस्याओं को सुनते थे, फिर उनकी बातों की संक्षिप्त टिप्पणियाँ तैयार करते और गांधीजी के सामने प्रस्तुत करते थे। वे आगंतुकों की गांधीजी से मुलाकात भी करवाते थे।

प्रश्न 16 : गामदेवी के मणिभवन पर गांधीजी से मिलने कौन-कौन लोग आते थे?

उत्तर : गामदेवी के मणिभवन पर अंग्रेज़ी शासन के अत्याचारों से पीड़ित लोग गांधीजी से मिलने आते थे। वे अपनी समस्याएँ और अंग्रेज़ों के ज़ुल्मों की कहानियाँ गांधीजी को सुनाते थे। सामान्य जनता के अलावा बड़े-बड़े देशी-विदेशी राजपुरुष, समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि, संगठनों के संचालक, पादरी, ग्रंथकार आदि भी गांधीजी से वहाँ मिलने आते रहते थे।

प्रश्न 17 : महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाड़ला बना दिया था?

उत्तर : महादेव भाई की 'विनय-विवेकयुक्त' चेतना ने उन्हें सबका लाड़ला बना दिया। महादेव जी देश-विदेश के उन समाचार-पत्रों पर पैनी दृष्टि रखते थे, जो गांधीजी की प्रतिदिन की गतिविधियों पर नज़र रखते थे और उन पर निरंतर टीका-टिप्पणी करते। गांधीजी को आड़े हाथों लेने वाले लेखों पर भी वे समय-समय पर लिखते। बेजोड़ कॉलम, चौकन्नी दृष्टि तथा बड़े-बड़े समाचार-पत्रों के आदर्शों पर चलने का गांधीजी का आग्रह तथा धुर विरोधियों के प्रति भी पूरी निष्ठा बरतते हुए विनय-विवेक-युक्त विवाद करने में पारंगत महादेव भाई देश-विदेश के समाचार-पत्रों के भी लाड़ले बन गए।

प्रश्न 18 : 'हार्नीमैन' कौन थे? उनको 'देश-निकाला' की सज़ा क्यों दी गई?

उत्तर : 'हार्नीमैन' मुख्य अंग्रेज़ी साप्ताहिक 'बांबे क्रोनिकल' के संपादक थे। वे एक सच्चे पत्रकार थे। अपने साप्ताहिक में वे भारतीयों की दुर्दशा और व्यथा पर लेख लिखते रहे थे। अंग्रेज़ी सरकार की नीतियों पर भी वे टिप्पणियाँ करते रहते थे। इससे नाराज़ होकर अंग्रेज़ी सरकार ने उन्हें 'देश-निकाला' की सज़ा दे दी।

प्रश्न 19 : महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर : महादेव जी गांधीजी के पत्रों को लिखते। उनकी लिखावट और वर्तनी संबंधी सावधानी का भारत में कोई बराबरी करने वाला नहीं था। वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव जी की लिखावट में जाते थे। इन पत्रों की शानदार लिखावट से वाइसराय भी अभिभूत हो उठते और उनके मन में महादेव भाई जैसा सेक्रेटरी (सचिव) पाने की इच्छा जाग उठती। बड़े-बड़े गवर्नर कहते थे कि पूरे ब्रिटिश प्रशासन में महादेव भाई जैसा लिखने वाला कोई नहीं है। पढ़ने वालों को उनकी लेखनी मंत्रमुग्ध कर देती थी।

प्रश्न 20 : गांधीजी को 'यंग इंडिया' का संपादक क्यों बनना पड़ा?

उत्तर : 'बंबई क्रॉनिकल' के संपादक हार्नीमैन की निर्भीकता व ईमानदारी से दुःखी होकर अंग्रेज़ी सरकार ने उन्हें देश-निकाला की सज़ा देते हुए इंग्लैंड भेज दिया। इससे बंबई के तीन बड़े नेता शंकरलाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास के साप्ताहिक समाचार-पत्र में लिखने वालों की कमी हो गई। तब गांधीजी ने

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उनकी इच्छा के अनुरूप 'यंग इंडिया' के संपादक का दायित्व सँभाल लिया, जो उन दिनों गांधीजी की भी आवश्यकता थी। बाद में 'नवजीवन' नामक समाचार-पत्र का कार्यभार भी गांधीजी के पास ही आ गया।

प्रश्न 21 : लेखक को साबरमती आश्रम में क्या-क्या उत्तरदायित्व सँभालना पड़ा?

उत्तर : लेखक स्वामी आनंद छह महीने के लिए साबरमती आश्रम पहुँचे। वहाँ उन्हें शुरू में ग्राहकों के हिसाब-किताब की तथा साप्ताहिकों को डाक में डलवाने की ज़िम्मेदारी मिली। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उन्हें संपादन सहित दोनों साप्ताहिकों की और छापाखाने की सारी व्यवस्था को देखने की ज़िम्मेदारी भी सँभालनी पड़ी।

प्रश्न 22 : महादेव भाई की अकाल मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर : महादेव भाई प्रतिदिन वर्धा की असहाय गरमी में सुबह मगनवाड़ी से पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचते और सारे काम निपटाकर शाम को पैदल ही वापस लौटते। इस तरह वे 11 मील प्रतिदिन पैदल चलते। यही उनकी अकाल मृत्यु का एक प्रमुख कारण था।

प्रश्न 23 : ''अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे''– आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**–इसका आशय यह है कि महादेव भाई गांधीजी के प्रति पूर्णरूप से समर्पित थे। वे गांधीजी के अभिन्न अंग थे और उनके सभी कार्यों में सहयोग करते थे। अपने मित्रों को वे बड़े गर्व से कहते थे कि वे गांधीजी के पीर (धर्मगुरु), बावर्ची (खाना बनाने वाले), भिश्ती (पानी भरने वाले) और खर (बोझा ढोने वाले गधे) हैं।

प्रश्न 24 : 'इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था।'—पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**–इस पंक्ति में महादेव भाई के वकालत छोड़ने के कारणों को बताया गया है। इसका आशय यह है कि महादेव भाई एवं उनके मित्र नरहरि भाई ने एक साथ वकालत पास की थी। दोनों ने एक साथ अहमदाबाद में वकालत प्रारंभ की। इस पेशे में गलत को सही तथा सही को गलत सिद्ध करना होता है। साहित्य एवं संस्कार का इस पेशे से कोई संबंध न था। अतः महादेव भाई ने इस पेशे को छोड़ साहित्य एवं सत्य का मार्ग अपनाया।

प्रश्न 25 : 'देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।'—पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**– प्रस्तुत पंक्ति में महादेव भाई की अकाल मृत्यु के विषय में बताया गया है। इसका आशय यह है कि महादेव भाई ने अपने उदार, विनम्र, त्यागपूर्ण और कर्मठ व्यक्तित्व से देश और दुनिया को मुग्ध कर दिया था। वे सभी के प्रिय बन गए थे। बीमारी की हालत में भी रोज़ 11 मील यात्रा करने के कारण उनकी अकाल मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से ऐसा लगा जैसे शुक्रतारे के समान अपने व्यक्तित्व की जगमगाहट से सबको मुग्ध करके वे अल्पकाल में ही अचानक अस्त हो गए।

प्रश्न 26 : 'उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।'— आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**–प्रस्तुत पंक्ति में महादेव भाई की सुंदर लेखन-शैली की विशेषता के विषय में बताया गया है। इसका आशय यह है कि गांधीजी के अधिकांश पत्र महादेव भाई लिखते थे। उनकी लिखावट इतनी सुंदर थी कि पढ़ने वाला मंत्र-मुग्ध हो उठता। जब महादेव भाई के लिखे गांधीजी के पत्र वाइसराय पढ़ते, तो उनके उठती। कई गवर्नर यह स्वीकार करते थे कि महादेव भाई जैसा लिखने वाला पूरे ब्रिटिश प्रशासन में नहीं है।

प्रश्न 27 : लेखक ने पाठ में महादेव देसाई का जो रेखाचित्र खींचा है, वह पाठकों को गद्गद कर देता है। इसके द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर : मूलतः गुजराती भाषा में लिखे गए प्रस्तुत पाठ 'शुक्रतारे के समान' में लेखक स्वामी आनंद ने गांधीजी के निजी सचिव तथा विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी महादेव भाई देसाई की अतुल्य प्रतिभा तथा व्यस्ततम दिनचर्या व जीवन को प्रदर्शित किया है। लेखक ने रेखाचित्र के नायक की ऊर्जा, लगन व प्रतिभा का आकलन किया है। महादेव भाई की सरलता, सज्जनता, निष्ठा, समर्पण व निरभिमानता को लेखक ने पूरी ईमानदारी से शब्दों में पिरोया है। निःसंदेह इस लेखनी ने नायक का ऐसा रेखाचित्र खींच दिया है कि पाठक को महादेव भाई पर गर्व हो आता है।

लेखक के अनुसार, कोई भी महान व्यक्ति महानतम कार्य तभी कर पाता है, जब उसके साथ कोई ऐसा सहयोगी हो, जो उसके सारे क्रियाकलापों व उलझनों में उसका निरंतर सहयोगी बना रहे। गांधीजी के लिए महादेव भाई व प्यारेलाल भाई ऐसे ही सहयोगियों में से थे।

प्रश्न 28 : गांधीजी के पास आने से पहले महादेव भाई क्या करते थे? उन्होंने वह काम क्यों छोड़ दिया?

उत्तर : गांधीजी के पास आने से पहले अपने विद्यार्थी जीवन में महादेव भाई सरकार के अनुवाद-विभाग में नौकरी करते थे। इसके बाद उन्होंने वकालत पढ़ी और अहमदाबाद में ही वकालत शुरू की। यह काम इन्हें पसंद नहीं आया; क्योंकि साहित्य और संस्कार का उससे कोई संबंध नहीं था। इस पेशे में स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह किया जाता है। महादेव और उनके मित्र ने टैगोर और शरदचंद्र के साहित्य को पढ़ना प्रारंभ कर दिया था। इसका इन पर गहरा प्रभाव पड़ा और यह गांधीजी से जुड़ गए।

प्रश्न 29 : 'शुक्रतारे के समान' शीर्षक की सार्थकता बताते हुए महादेव भाई के सेवाधर्म पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : 'शुक्रतारे के समान' पाठ का शीर्षक बिलकुल उचित है। आकाशीय तारों में शुक्र का विशेष स्थान है। इसे चंद्रमा का साथी माना गया है। कवियों ने इसकी आभा-प्रभा का वर्णन किया है। नक्षत्र -मंडल की कलगी के समान यह सबसे तेजस्वी तारा है, लेकिन पृथ्वीवासी सुबह-शाम घंटे-दो-घंटे ही इसे देख सकते हैं; क्योंकि यह शीघ्र ही अस्त हो जाता है। ठीक इसी प्रकार महादेव भाई देश की स्वतंत्रता के प्रारंभिककाल में अपनी आभा से देश को जगमगाकर, सबको मुग्ध करके और अपनी अमिट छाप छोड़कर शुक्रतारे के समान अल्पकाल में ही अस्त हो गए। सेवाधर्म पालन और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का उनसे अच्छा कोई उदाहरण नहीं है। वे गांधीजी के सचिव थे और उनके प्रति पूर्णरूप से समर्पित थे। वे स्वयं को गांधीजी का 'हम्माल', 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' कहते हुए गर्व का अनुभव करते थे। गांधीजी से जुड़ने के बाद वे हमेशा उनके अनुगामी बने रहे। सेवा-धर्म का इससे श्रेष्ठ उदाहरण कोई नहीं है। दुःख इस बात का है कि आज़ादी का सूर्य उगने से पहले ही वे अस्त हो गए। इस प्रकार 'शुक्रतारे के समान' शीर्षक सब

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 30 : अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी महादेव भाई अपना अध्ययन और लेखन का कार्य कैसे कर लेते थे?

उत्तर : महादेव भाई बहुत व्यस्त रहते थे। उन पर गांधीजी के सभी कार्यों की ज़िम्मेदारी थी। वे अधिकतर गांधीजी के साथ यात्राओं पर रहते थे, लेकिन फिर भी वे अध्ययन और लेखन कर लेते थे। महादेव भाई साहित्यिक पुस्तकों की तरह ही राजनैतिक विचारों और परिघटनाओं से संबंधित जानकारी देने वाली पुस्तकें भी पढ़ते रहते थे। भारत से संबंधित देश-विदेश की समकालीन राजनैतिक गतिविधियों और चर्चाओं की नई-से-नई जानकारी उनके पास मिल जाती थी।

वे सभाओं में, कमेटियों की बैठकों में या दौड़ती रेलगाड़ियों के डिब्बों के ऊपर की बर्थ पर बैठकर, ठूँस-ठूँसकर भरे अपने बड़े-बड़े झोलों में रखे नए-नए समाचार-पत्र, मासिक पत्र तथा पुस्तकें पढ़ते रहते तथा 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के लिए लेख लिखते रहते। महादेव भाई अपनी विशिष्ट शैली में इतनी शुद्ध और सटीक टिप्पणी करते थे कि लोग उनकी टिप्पणियों से अपने लेखन में सुधार किया करते थे। प्रथम श्रेणी की शिष्ट, संस्कार-संपन्न भाषा और मनोहारी लेखन-शैली संबंधी ईश्वरीय देन महादेव जी को प्राप्त थी।

प्रश्न 31 : उत्तर प्रदेश और बिहार की ज़मीन कैसी है? उससे महादेव भाई के सामीप्य की तुलना क्यों की गई है?

उत्तर : 'शुक्रतारे के समान' पाठ में बिहार और उत्तर प्रदेश की धरती के गुणों की विवेचना के आधार पर महादेव जी की तुलना इस प्रकार से की गई है–

"बिहार और उत्तर प्रदेश के हज़ारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले 'गाद' के बने हैं। आप सौ-सौ कोस चल लीजिए, रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी इस मैदान में कहीं नहीं मिलेगा।

इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को उनके व्यवहार से ठेस या ठोकर लगने की बात तो दूर रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी जैसी तनिक भी कठोरता का अनुभव कभी नहीं होता था। उनकी निर्मल प्रतिभा उनके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को चंद्र-शुक्र की प्रभा के साथ दूधों नहला देती थी। उसमें सराबोर होने वाले के मन में उनकी इस मोहिनी छवि का नशा कई-कई दिन तक उतरता न था।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

गांधीजी के पास आने के पहले अपनी विद्यार्थी अवस्था में महादेव ने सरकार के अनुवाद-विभाग में नौकरी की थी। नरहरि भाई उनके जिगरी दोस्त थे। दोनों एक साथ वकालत पढ़े थे। दोनों ने अहमदाबाद में वकालत भी साथ-साथ ही शुरू की थी। इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता है। साहित्य और संस्कार के साथ इसका कोई संबंध नहीं रहता। लेकिन इन दोनों ने तो उसी समय से टैगोर, शरदचंद्र आदि के साहित्य को उलटना-पुलटना शुरू कर दिया था। 'चित्रागंदा' कच-देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका, 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि अनुवाद उस समय की उनकी साहित्यिक गतिविधियों की देन हैं।

1. महादेव देसाई ने विद्यार्थी अवस्था में कहाँ नौकरी की थी–

(क) होटल में
(ख) समाचार-पत्र के दफ़्तर में
(ग) सरकार के अनुवाद-विभाग में
(घ) न्यायालय में।

2. महादेव देसाई के जिगरी दोस्त थे–

(क) नरहरि भाई (ख) चिम्मन भाई
(ग) वल्लभ भाई (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. वकालत के पेशे में आमतौर पर क्या करना होता है–

(क) सत्य बोलना होता है
(ख) स्याह को सफ़ेद करना होता है
(ग) सफ़ेद को स्याह करना होता है
(घ) स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता है।

4. दोनों मित्रों ने कहाँ साथ-साथ वकालत शुरू की थी –

(क) बंबई में (ख) दिल्ली में
(ग) अहमदाबाद में (घ) इलाहाबाद में।

5. 'विदाई का अभिशाप' किसके द्वारा रचित रचना है–

(क) शरदचंद्र (ख) टैगोर
(ग) प्रेमचंद (घ) भारतेंदु हरिश्चंद्र।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. 'शुक्रतारे के समान' पाठ के लेखक हैं–

(क) स्वामी आनंद (ख) धीरंजन मालवे
(ग) काका कालेलकर (घ) गणेश शंकर विद्यार्थी।

7. गांधीजी की आत्मकथा का क्या नाम है–

(क) सत्य का प्रकाश (ख) सत्य के प्रयोग
(ग) सत्य-वचन (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. नरहरि भाई और महादेव ने साथ-साथ किसकी पढ़ाई की थी–

(क) पत्रकारिता की (ख) वकालत की
(ग) संगीत की (घ) हिंदी-अनुवाद की।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. 'शुक्रतारे के समान' पाठ में शुक्रतारे से किसकी तुलना की गई है और क्यों?

10. 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?

11. महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?

12. गांधीजी को 'यंग इंडिया' का संपादक क्यों बनना पड़ा?

13. 'देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।'– पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in